शिवाजी विश्वविद्यालय
हिंदी विभाग
कोल्हापुर.

डॉ. अर्जुन चव्हाण
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर.

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि **जितेंद्र विष्णू कांबळे** द्वारा लिखित **''गिरिराज किशोर की कहानियों में चित्रित समस्याएँ''** ('नीम के फूल', 'पेपरवेट', 'रिश्ता और अन्य कहानियाँ', 'हम प्यार कर लें' के विशेष संदर्भ में) यह लघु शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

13/06/05

स्थान : कोल्हापुर।
तिथि : 1 3 JUN 2005

अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।

DR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

डॉ. सावंत एस्. एस्.
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
विलिंग्डन महाविद्यालय,
सांगली।

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **जितेंद्र विष्णू कांबळे** ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए लघु शोध-प्रबंध **''गिरिराज किशोर की कहानियों में चित्रित समस्याएँ''** ('नीम के फूल', 'पेपरवेट', 'रिश्ता और अन्य कहानियाँ', 'हम प्यार कर लें' के विशेष संदर्भ में) मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। यह कार्य पूर्व योजनानुसार संपन्न हुआ है। यह परीक्षार्थी की मौलिक कृति है। जितेंद्र विष्णू कांबळे के प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूँ।

स्थान : कोल्हापुर।
तिथि : 13/6/05

शोध-निर्देशक
डॉ. सावंत एस्. एस्.

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

प्रख्यापन

"गिरिराज किशोर की कहानियों में चित्रित समस्याएँ" ('नीम के फूल', 'पेपरवेट', 'रिश्ता और अन्य कहानियाँ', 'हम प्यार कर लें' के विशेष संदर्भ में) लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है जो एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए लघु शोध-प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान : कोल्हापुर।
तिथि : 13/6/05

शोध-छात्र
जि. वि. कांबळे
(जितेंद्र विष्णू कांबळे)

प्राक्कथन

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

प्राक्कथन

कहानी मेरे अध्ययन और रुचि का विषय रही है। हिंदी साहित्य में गिरिराज किशोर का स्थान बहुत ऊँचा है। मुझे विश्वविद्यालय के ग्रंथालय में गिरिराज किशोर द्वारा लिखित 'नीम के फूल' कहानी संग्रह मिला। जैसे ही मैंने उसको पढ़ा तब मैंने यह तय किया कि, क्यों न मैं गिरिराज किशोर के कहानी साहित्य को अपने एम्. फिल. के लघु शोध-प्रबंध के लिए ले लूँ। आदरणीय गुरुवर्य डॉ. साताप्पा सावंतजी से मैंने इस विषय के बारे में चर्चा की तब उन्होंने इस विषय पर मुझे मार्गदर्शन करने की स्वीकृति दी।

गिरिराज किशोर का कहानी साहित्य विस्तृत है। अतः एम्. फिल. लघु शोध-प्रबंध के अध्ययन हेतु 'नीम के फूल', 'पेपरवेट', 'रिश्ता और अन्य कहानियाँ' और 'हम प्यार कर लें' कहानी-संग्रहों को लिया है, जो 1964 ई. से 1980 ई. तक के हैं। इनमें से उपर विवेचित चुनिंदा कहानी संग्रहों को एम्. फिल्. लघु शोध-प्रबंध के अध्ययन का विषय बनाया है।

गिरिराज किशोर जी बहुमुखी प्रतिभा लेकर हिंदी साहित्य में अवतीर्ण हुए हैं। गिरिराज सातवें दशक के उन विशिष्ट सर्जकों में से हैं, जिनमें पुराणों से टूटकर चलने का आग्रह नहीं है। उनमें शिल्प परिवर्तन संबंधी कोई विशिष्ट प्रयत्न भी स्पष्ट रूप से नहीं है। किंतु एक ऐसा बिंदू अवश्य मिल जाता है जो उन्हें अपने समकालीनों से भी स्पष्टता अलगाव देता है। अलगाव का यह बिंदू उनकी सूक्ष्म दृष्टि है। जो उनकी निरीक्षण क्षमता की परिचायक है तथा अभिव्यक्ति के माध्यम की देन है।

गिरिराज किशोर की कहान्यिों में समाज के प्रत्येक स्तर का वर्णन दिखाई देता है। उन्होंने समाज में जो बारीकी से देखा, भोगा उसी को अपनी कलम द्वारा उतारा है। सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक, आदि विविध विषयों से संबंधित गिरिराज किशोर ने कहानियाँ लिखी हैं।

अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे सामने निम्नांकित प्रश्न खड़े थे-

1. गिरिराज किशोर जी का जीवन किस तरह बीता है ?
2. समस्या का अर्थ, स्वरूप, परिभाषा क्या है ?

3. उनकी कहानियों का मूल उद्देश्य क्या है ?
4. उन्होने अपने कहानियों में सामाजिक समस्याओं को कैसे चित्रित किया है ?
5. गिरिराज किशोर जी ने राजनीतिक समस्याओं को कैसे चित्रित किया है ?
6. उन्होने आर्थिक समस्याओं के अंतर्गत कौन-कौनसी समस्याओं का विवेचन किया है ?

उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर जानने तथा विषय-विवेचन में सुसंगतता लाने हेतु मैंने अपने विषय को छ अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय - ''गिरिराज किशोर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व'' में उनका जन्म, माता-पिता, परिवार, बचपन, शिक्षा, नौकरी तथा व्यवसाय, दांपत्य जीवन आदि का विविचन है। जीवन यात्रा के साथ उनकी रचनाएँ, रचनाओं का प्रकाशन तथा प्रकाशन वर्ष का विवरण दिया गया है। उसके बाद उनकी अनूदित रचनाएँ दी गई हैं। गिरिराज किशोर को उनके साहित्य तथा कार्य के लिए जो पुरस्कार मिले वह भी दिये गए हैं। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं।

द्वितीय अध्याय - ''समस्या का स्वरूप अर्थ एवं परिभाषा'' में 'समस्या' के विभिन्न अर्थ, परिभाषाएँ, समस्या का स्वरूप, समस्या साहित्य की विशेषताएँ एवं उदेश्य, समस्या और साहित्य का परस्पर संबंध, साहित्य, समाज और समस्याएँ अंतःसंबंध की चर्चा करके अंत में प्राप्त निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं।

तृतीय अध्याय - ''गिरिराज किशोर की कहानियों का सामान्य परिचय'' में प्रस्तुत अध्याय में किशोरजी द्वारा लिखित प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लिए निर्धारित कहानियों का संक्षिप्त में परिचय दिया है। जिसको पढ़कर किशोर जी के कहानी साहित्य का वर्ण्य विषय समझा जा सकता है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिये हैं।

चतुर्थ अध्याय - ''गिरिराज किशोर की कहानियों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ'' में अवैध यौन-संबंध की समस्या, घरेलू नौकरों की समस्या, स्त्री-पुरुष के बीच नैसर्गिक आकर्षण की समस्या, असफल प्रेम विवाह की समस्या, समलैंगिकता की समस्या, अनाथ बच्चों की समस्या, विधवा समस्या, विवाह विच्छेद की समस्याओं पर चर्चा की गई है और अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

पंचम अध्याय - "गिरिराज किशोर की कहानियों में चित्रित आर्थिक समस्याएँ" में बेरोजगारी की समस्या, गरीबी की समस्या, महँगाई की समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या, भूख की समस्या, दलाली की समस्या, भिक्षावृत्ति की समस्या, व्यसनाधिनता की समस्याओं पर चर्चा करके अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं।

षष्ठ अध्याय - "गिरिराज किशोर की कहानियों में राजनीतिक समस्याएँ" में दफ्तरशाही वर्तज लालफीताशाही की समस्या, राजनेताओं द्वारा बेरोजगार युवकों को फसाने की समस्या, हड़ताल की समस्या, भ्रष्ट पुलिस व्यवस्था की समस्या, युद्ध की समस्या, दलबदलू नेता की समस्या, सत्ता का दुरूपयोग करने की समस्या, दौरे की समस्याओं पर चर्चा करके अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं।

उपसंहार - अंत में उपसंहार दिया है, जिसके अंतर्गत सभी अध्यायों के निष्कर्षों को सार रूप में प्रस्तुत किया गया है। तत्पश्चात् परिशिष्ट तथा आधार ग्रंथ सूची, संदर्भ ग्रंथ सूची प्रस्तुत की है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता -

1. गिरिराज किशोर की कहानियों में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक समस्याओं का चिंतन मिलता है।
2. गिरिराज किशोर जी ने सामाजिक समस्याओं को अधिक महत्त्व दिया है।
3. वर्तमान काल में अवैध यौन-संबंध की समस्या, घरेलू नौकरों की समस्या, दलबदलू नेता की समस्या, वेश्यावृत्ती की समस्या, काम संबंधी एक्सचेंज संस्कृति की समस्या की स्थिति अधिक गंभीर दिखाई देती है।
4. गिरिराज किशोर जी ने समाज के प्रत्येक स्तर को दर्शाया है।
5. पात्रों का मनौवैज्ञानिक अध्ययन सीमित पात्र संख्या, परिस्थितिनुकूल भाषा का प्रयोग आदि विशेषताएँ उनकी कहानियों में दिखाई देती हैं।

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को सफल बनाने में जिन विद्वानों का एवं स्नेहियों का प्रोत्साहन एवं सहयोग मिला उन सभी का आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

प्रस्तुत शोध-कार्य के संकल्प की पूर्ति गुरुवर्य आदरणीय डॉ. सावंत एस्. एस्., अध्यक्ष, हिंदी विभाग, विलिंग्डन महाविद्यालय, सांगली के कृपापूर्ण मार्गदर्शन का फल है।

हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ. अर्जुन चव्हाणजी, पूर्व अध्यक्ष प्रो. डॉ. पी. एस्. पाटीलजी, डॉ. व्ही. के. मोरेजी, डॉ. बाजीराव पवार, शंकर माळी (कळंबी हायस्कूल के भूतपूर्व, मुख्याध्यापक) इन सभी का मैं ऋणी हूँ। जिन्होने समय-समय पर मार्गदर्शन कर इस कार्य को पूरा करने में मेरी सहायता की है।

मेरे जीवन का कोई भी कार्य माता-पिता के बिना संपन्न नहीं हुआ है। इन्हीं के आशीर्वाद का फल है कि मैं अपने कार्य की पूर्ति में सफल हुआ हूँ। आज मैं जो कुछ भी हूँ, उन्हीं की बदौलत हूँ। अंतः इनका आभार मानकर मैं इनके ऋण से मुक्त नहीं होना चाहता, क्योंकि ऋण तो गैरों का चूकाया जाता है, अपनों का नही।

मैं भाग्यशाली हूँ कि मेरे छोंटे भाई सुनिल ने छोटा होकर भी आज तक की पढ़ाई का पूरा बोझ उठाया है और मुझे आर्थिक सहायता की है। मेरा छोटा भाई अनिल, बहन उज्वला, बहनोई संजय चंदनशिवे, भांजे- विक्रांत, प्रणव, माय और मेरी पत्नी कुसुम ने प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध कार्य पूरा करने के लिए प्रेरणा दी। उनके बिना यह कार्य असंभव ही था।

इस भौतिक युग में सच्चे मित्र मिलना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है। परंतु मैं इस मामले में भाग्यशाली हूँ। मुझे रणझुंजार युवक मंडळ, सिध्देवाडी के सभी मित्र- बंडा खरात, महावीर, संभाजी खोत, मुकिंदा, जोतिराम, नारायण, राघू, बाबू शिनगारे, शरद, शहाजी, आनंदा एडके, दशरथ चव्हाण, जोतिराम खोत, प्रकाश जाधव, बजरंग कडीमाळी, नवनाथ पाटील, शिवराज शिंदे, विकास कुटे, विजय, विष्णू नरूटे, भागवत कांबळे, बुडूख, राठौड, हिप्परकर जैसे

सच्चे मित्र मिले और जिन्होने इस लघु शोध-प्रबंध को पूरा करने में मेरी मदद की। अतः इनके प्रति भी मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

इस लघु शोध-प्रबंध को संपन्न करने में निम्नांकित ग्रंथालयों का बहुमूल्य योगदान रहा है-

1) शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर.
2) राजाराम कॉलेज, कोल्हापुर.
3) विलिंग्डन महाविद्यालय, सांगली.
4) शि .म. डॉ. बापूजी साळुंखे महाविद्यालय, मिरज।

इन ग्रंथालयों के प्रमुख एवं कर्मचारियों का मैं हृदय से आभारी हूँ। मैं उन कृतिचारों और विद्वानों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ, जिनकी सृजनात्मक और वैचारिक रचनाओं का उपयोग मैंने इस लघु शोध-कार्य में किया है।

इस लघु शोध-प्रबंध का टंक लेखन अल्ताफ मोमीन जी ने उत्तम और बड़ी तत्परता से किया। इसलिए मैं उनके प्रति आभार प्रकट करता हूँ। अंत में सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जिन्होने जाने-अनजाने में ही सही इस लघु शोध-प्रबंध कार्य में मेरी मदद की है उन सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर विनम्रता से विद्वानों के सामने मैं अपने लघु शोध-प्रबंध को परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

शोध-छात्र

जि. वि. कांबळे

जितेंद्र विष्णू कांबळे